कलम की सुगंध
अर्णव कलश एसोसिएशन

मेरी कुण्डलियाँ

डॉ. सरलासिंह 'स्निग्धा'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मेरी कुण्ड़लियाँ

(कलम की सुगंध छंदशाला)

डॉ सरला सिंह "स्निग्धा"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-231-9
संपादक- अनिता मंदिलवार "सपना"
आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, डॉ सरला सिंह "स्निग्धा"
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY DR> SARLA SINGH "SNIGDHA".

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

सरला की लेखनी करे, कितने यहाँ कमाल।
कहती सपना है यही, आप रहो खुशहाल।।

कलम की सुगंध छंदशाला के द्वारा समय समय पर छंद विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पर शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में संपन्न होते रहें है ।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगंध ने अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई। आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी क्रम में आदरणीया डॉ.सरला सिंह "स्निग्धा" जी का एकल संग्रह **"मेरी कुण्डलियाँ"** प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीया "स्निग्धा" जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीया स्निग्धा जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलियाँ जैसे कठिन छंद विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मक ता का परिचायक है।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नई यात्रा तय कर अपनी निर्धारित मंजिल को अवश्य प्राप्त करेगी।

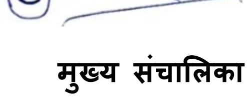

मुख्य संचालिका
अनिता मंदिलवार सपना
कलम की सुगंध छंदशाला

समीक्षा

सपना तो सभी देखते हैं और जब सपना पूरा हो जाता है तो उसकी खुशी हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते हैं ।

डॉक्टर सरला सिंह "स्निग्धा" दिल्ली से है और शिक्षा विभाग दिल्ली में कार्यरत हैं। आप की अनेकानेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इनमें दो काव्यसंग्रह १-जीवनपथ २-आशादीप है, ३-(एक कहानी संग्रह) मेरे जीवन का समर है, ४-शोधग्रंथ- "हिन्दी के आधुनिक पौराणिक प्रबंध काव्यों में पात्रों का चरित्र विकास" है। इसके अलावा कई साझा काव्यसंग्रहों तथा कहानी संग्रहों में आपकी रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। इसके अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी आपकी रचनाएं निरन्तर प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी लेखनी हर विधा में चली है और आप समय-समय पर जैसे साहित्य रत्न, साहित्य सागर, महिला गौरव और साहित्य श्री आदि सम्मानों से सम्मानित होती रही हैं। कलम की सुगंध, मगसम और भी कई साहित्यिक संस्थानों से आप जुड़ी हैं और उनकी सक्रिय सदस्य हैं

प्रस्तुत कुण्डलियां संग्रह में आपने जीवन के हर पहलू पर कुंडलियां लिखी हैं। महिलाओं को आप विशेष महत्व देती हैं और महिला होने के नाते आपने अपनी कुंडलियों में वेणी, कुमकुम, गजरा, काजल, पायल ,बिछिया, डोली को कुंडलियां में सुशोभित किया है। माँ का आंचल बहुत सुंदर शब्दों में बहुत अच्छे तरीके से आपने कुंडलियों में पिरोया है। इसके अलावा सरला जी ने सागर, आसमान, वीणा, यानी जीवन के हर क्षेत्र को छूते हुए आप भारत के बारे में भी आपने लिखा है ।

छाया, निर्मल, धरती, सागर, और गहराई भी नापी है आपने और ऊंचाई को भी देखा है। धागे को भी आपने लिया है और अगर गलती हो जाती है तो हम क्या करते हैं तो इस तरह से मैंने आपकी लेखनी में बहुत अच्छा अनुभव किया।

आपको उड़ने की इच्छा है। उड़ान कुंडलिया को पढ़ने से पता चलता है कि आप चांद सूरज तक की उड़ान भरना चाहती हैं। फूल पत्ते को भी आपने बहुत सुंदर तरीके से अपनी लेखनी में कैद किया है।

आप कहती हैं बोलने से पहले हमें हमेशा अपनी बोली को तोल लेना चाहिए और हमें साथ रहते हुए मृदुल वाणी का आदर करना चाहिए। गीता पर भी आपने सुंदर कुंडलिया लिखी है आप कहती हैं कि गीता तुम पढ़ना सदा देती है वह ज्ञान। दुख-सुख आते हैं और उसमें भी आपने कुंडलियों का सुंदर सृजन किया है। आप कहती हैं कि मां के चरणों में अपना सिर रखकर मैं मां को वंदन करूंगी और दीपक को हाथ में लेकर के भी आप मां का वंदन करना चाहती हैं। आपकी पैनी नजर ने मंदिर में बिछा हुआ आसन भी नहीं छोड़ा।

हमारे मन में किसी प्रकार का अंकुश नहीं होता है मन बावरा होकर इधर-उधर बहुत भटकता है तो आपने बताया है कि अंकुश अपने मन पर लगाओ और सभी कार्य हमारे हल हो जाएंगे इसके अलावा आपने टीका चंदन के बारे में भी अपनी कुंडलियों में दर्शाया है और अंत में आप कहती हैं कि सपना जो हमने देखा है वह हमको मंजिल मिल जाए हमारा सपना पूरा हो जाए और मंजिल पास में आ गई है और आदरणीया मैं राधा तिवारी 'राधेगोपाल 'ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि आपके हर सपने जीवन में पूरे हो। आपकी ओर भी बहुत सारी पुस्तकें प्रकाशित होती रहे। आप दीर्घायु हो।

राधा तिवारी "राधेगोपाल"
खटीमा, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड
(एलटी अंग्रेजी अध्यापिका) रा उ मा वि सबौरा

शुभकामना संदेश

प्रिय डॉ सरला सिंह "स्निग्धा" जी,

कलम की सुगंध पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ का शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह **'मेरी कुण्डलियाँ'** विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी। और इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं....!

संजय कौशिक 'विज्ञात'
संस्थापक
कलम की सुगंध

कवयित्री की कलम से

यह एक अत्यंत हर्ष का विषय है कि "अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन" द्वारा मेरा एकल कुण्डलिया संग्रह प्रकाशित हो रहा है। यह संग्रह छंद की कुण्डलियाँ विधा में लिखा गया है। "मेरी कुण्ड़लियाँ" नाम से यह पुस्तक प्रकाशन में आ रही है।

इस से पहले मैं ज्यादातर छन्दमुक्त कविता लेखन करती रही थी। कलम की सुगंध मंच से जुड़ कर मुझे छंद लेखन की नई दिशा मिली। कलम की सुगंध एक ऐसा उत्कृष्ट मंच है जहां नवांकुर रचनाकारों को सदा साहित्य की नयी विधाओं में लिखने की प्रेरणा मिलती है।

आदरणीय संजय कौशिक सर ने मुझे कुण्डलिया छंद में लिखने की प्रेरणा दी तथा मार्गदर्शन किया। आदरणीय संजय कौशिक "विज्ञात" जी के समय-समय पर दिए दिशा निर्देश और प्रोत्साहन से ये संकलन पूर्ण हुआ। आदरणीया अनिता मंदरिवाल जी का भी सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए सादर आभार।

छंद लेखन की मेरी ये यात्रा बड़ी रोचक और रोमांचक रही। आदरणीय संजय कौशिक जी का विशेष आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने मुझे शुरुआत में इस विधा लेखन में सहृदय सहयोग दिया, मुझे सम्बल प्रदान किया।

इस संग्रह के लिए मैं अपने परिवारजनों की भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे मेरे इस कार्य में पूरी तरह से साथ दिया, उनके सहयोग के बिना शायद यह लेखन मेरे लिए असंभव होता।

अब जब ये संग्रह प्रकाशित हो रहा है तो आशा करती हूं मेरा प्रयास आप सभी को पसंद आयेगा और इसे आप सभी का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

डॉ सरला सिंह "स्निग्धा"
हिन्दी अध्यापिका
शिक्षा विभाग, दिल्ली

1

वेणी

वेणी बालों में सजी, सजी महावर पांव।
आंखों में कजरा लगा, चली पिया के गांव।।
चली पिया के गांव, बजी मन में शहनाई।
बड़ी शुभघड़ी आज, मिलन की वेला आई।।
कहती सरला बात, लगी घबराने गृहिणी।
लाल लाज से गाल, लगी खुलने जी वेणी।।

2

कुमकुम

कुमकुम है माथे सजी, लगा रंग है लाल।
अंखियन में कजरा सजे, लहराते हैं बाल।।
लहराते हैं बाल, सजी द्वारे रंगोली।
आंखों से हो बात, करें सब हंसी ठिठोली।।
कहती सरला आज, लगे कुछ गोरी गुमसुम।
पायल की आवाज, बड़ी मनभावन कुमकुम।।

3

काजल

काजल ते काले भये, सखी नयन हैं आज।
माथे पर चमके बिंदी, सजी आंख में लाज।।
सजी आंख में लाज, लगे गोरी बहु भोली।
करत संभल के बात, सभी की वो हमजोली।।
कहती सरला आज, सखी साजन हित पागल।
चहुंदिशि ढूंढै पीय, बहे अखियों से काजल।।

4

गजरा

गजरा बालों में लगा, सजा महावर पांव।
गोरी झूमति है चली, अरी कौन से गांव।।
अरी कौन से गांव, कहां की है तू गोरी।
बोलत मुख ते नाहिं, करे काहे मुंहजोरी।।
कहती सरला बात, चली पनघट ले गगरा।
सभी सहेली साथ, लगा बालों में गजरा।।

5

पायल

पायल पैरों में सखी, चली पहनकर आज।
माता हैं हर्षित भयी, करें सुता पर नाज़।।
करें सुता पर नाज़, लगे मनभावन सूरत।
देवी दिखती आज, सुता जैसे हो मूरत।।
कहती सरला बात, भयी माता है कायल।
हाथों कंगन साथ, बजे पैरों में पायल।।

6

कंगन

सोहे कंगन हाथ में, लगे सुहाना आज।
माथे चमके बिंदिया, करे मातु है नाज।।
करे मातु है नाज, सजी बेटी की डोली।
द्वारे वन्दनवार, बड़ी फबती रंगोली।।
कहती सरला बात, छवी बेटी की मोहे।
रोये दिल में मात, नहीं कुछ उसको सोहे।।

7
बिंदी

छोटी सी बिंदी सजी, गले पड़ी वनमाल।
हाथों में कंगन सखी, लगे सुनहरे बाल।।
लगे सुनहरे बाल, सभी के मन को हरती।
खुशियों की सौगात, संग में वो ले फिरती।।
कहती सरला बात, नजर न लगे अब खोटी।
डोले इत उत आज, अभी है वय की छोटी।।

8
डोली

डोली गोरी की चली, अरे पिया घर आज।
छूटी माता की गली, गया हाथ से राज।।
गया हाथ से राज, सभी पीछे रह जाता।
बीत गया जो आज, कहां वापस मिल पाता।।
कहती सरला बात, करो न हंसी ठिठोली।
पड़े नहीं है जान, चले कब तेरी डोली।।

9
कजरा

कजरा आंखों में लगा, लगे करत हों बात।
हाथों में कंगन सजा, चले कमर बल खात।।
चले कमर बल खात, लगे वह कितनी भोली।
बांधे करधनी साथ, बात में मिश्री घोली।।
कहती सरला आज, लगे मनभावन गजरा।
बोलत मुख से नाहि, लगे बतियाती कजरा।।

10

आंचल

आंचल माथे पर सजा, लगे सुहाना आज।
कंचन सी काया लगे, करे रूप पर नाज।।
करे रूप पर नाज, लगे सूरत भी भोली।
हाथों में मेंहदी साथ, लगा माथे पर रोली।।
कहती सरला बात, सजा आंखों में काजल।
बढ़ती शोभा देख, हुआ जग सारा पागल।।

11

चूड़ी

पहने हाथों में सखी, देखो चूड़ी आज।
लाल हरी अरु बैंगनी, रही हाथ में बाज।।
रही हाथ में बाज, सभी के मन को भाता।
भाती कंगन बीच, करे धुन मधुर सुहाता।।
कहती सरला बात, चली वह पहने गहने।
लगती सुंदर आज, बड़ी वह जेवर पहने।।

12

झुमका

कानों का झुमका बना, सवा लाख के मोल।
रत्नों से लटकन बनी, सके न कोई तोल।।
सके न कोई तोल, बढ़ी राधे की शोभा।
चमके तड़ित समान, हटे मन का क्षोभा।।
सरला कहती बात, बड़ा मधु पल ये जानों।
लगता मनहर आज, झूम राधा के कानों।।

13

जीवन

जीवन यह अनमोल है, करले इसका मोल।
बार-बार मिलता नहीं, खो मत तू बिन तोल।।
खो मत तू बिन तोल, चला है व्यर्थ गँवाने।
अपने को भी आज, कहाँ है तू पहचाने।।
कहती सरला बात, खिले हैं सुंदर उपवन।
मिले हमें दिन चार, करो तुम मनहर जीवन।।

14

उपवन

ऐसा यह संसार है, उपवन जैसा मान।
तरह तरह के लोग हैं, लगते पुष्प समान।।
लगते पुष्प समान, रहो मिलजुलकर भाई।
गाये कोयल गीत, बजे मन में शहनाई।।
कहती सरला आज, करो जग को ही वैसा।
आयें दौड़े देव, कहें जग हो बस ऐसा।।

15

कविता

कविता ऐसी रच सदा, करे कलुषता दूर।
ज्ञानी सम आंखें खुलें, भरे ज्ञान भरपूर।।
भरे ज्ञान भरपूर, बढ़े सब में चतुराई।
आपस में हो प्यार, करें न कोई लड़ाई।।
कहती सरला आज, करो रचना सम सविता।
बहती पावन धार, कहें ऐसी हो कविता।।

16

ममता

ममता धन सबसे बड़ा, वहीं रत्न की खान।
दौलत है सबसे बड़ी, बात यही ले जान।।
बात यही ले जान, करें सब लोग बड़ाई।
जग हो कर मत एक, करे जो नहीं लड़ाई।।
कहती सरला बात, नहीं है इसकी समता।
पावन जग में नाम, कहें सब उसको ममता।।

17

बाबुल

बाबुल की भूली गली, पिया मिलन की चाह।
माया तृष्णा रोककर, खड़ी आज हैं राह।।
खड़ी आज हैं राह, उसे हैं लोभ दिखाती।
दौलत का भंडार, नहीं उसको भरमाती।।
कहती सरला आज, पिया बिन मन है आकुल।
छोड़ा सब घर-बार, नहीं भाये अब बाबुल।।

18

भैया

भैया की प्यारी परी, कहे भरे मन आज।
मैया की मैं लाडली, बाबा की सरताज।।
बाबा की सरताज, हमें दूर नहीं जाना।
जीना तेरे साथ, यही दिल ने है ठाना।।
कहती सरला आज, कहे रोकर के मैया।
जीवन की यह रीत, सके न बदल हैं भैया।।

19

बहना

बहना तुम डरना नहीं, बनो बहादुर वीर।
छोड़ो बनना तुम कली, रखो हाथ में तीर।।
रखो हाथ में तीर, करें अब वार न कोई।
बीती सदियां आज, रही तू अब तक सोई।।
कहती सरला आज, कभी अन्याय न सहना।
भाई का आशीष, सदा खुश रहना बहना।।

20

सखियाँ

डोलत बगियों में सखी, घूमें सखियां साथ।
झूलत है झूला कभी, लिए हाथ में हाथ।।
लिए हाथ में हाथ, करें आपस में मस्ती।
गाती मिल के गीत, लगे मनभावन बस्ती।।
सरला कहती बात, यहां सब मिलके बोलत।
सुन्दर लगती आज, सखी जब वन में डोलत।।

21

कुनबा

जोड़े कुनबा मैं रही, रखे सभी पर प्रीत।
पाई पाई जोड़ के, पूरी की सब रीत।।
पूरी की सब रीत, भये सब दौलत वाले।
कोठी गाड़ी साथ, हुए कुछ मन के काले।।
सरला कहती आज, खड़े वह मुख को मोड़े।
देते कब हैं साथ, नहीं अब नाता जोड़े।।

22

पीहर

गोरी पीहर से चली, गली पिया घर आज।
माथे डाले चूनरी, हार गले में साज।।
हार गले में साज, अरे ये बिंदी चमके।
चमके यह सिन्दूर, साथ गजरा भी महके।।
कहती सरला आज, लगे बंधी हो डोरी।
बहके दोनों पैर, चली पिय के घर गोरी।।

23

पनघट

राधा जी पनघट चलीं, लेकर गोपी साथ।
कान्हा भी पीछे चले, लिए बांसुरी हाथ।।
लिए बांसुरी हाथ, करें सबकी चितचोरी।
मटकी फोड़त जात, करें सब से बरजोरी।।
कहती सरला आज, हरो मेरी भवबाधा।
कान्हा के ही साथ, कृपा बरसावें राधा।।

24

सैनिक

रहते सरहद पर डटे, सैनिक मेरे वीर।
देकर अपने प्राण भी, हरें देश की पीर।।
हरें देश की पीर, करे नित देश की रक्षा।
बारिश गरमी शीत, रहे निरत देश सुरक्षा।।
सरला कहती बात, सभी मौसम वे सहते।
भारत की ये शान, डटे हरदम ये रहते।।

25

कोयल

गाये कोयल बाग में, रहे सभी मुस्काय।
अनुपम शोभा है लगे, उपमा दिया न जाय।।
उपमा दिया न जाय, लगे कोयल मतवाली।
मधुरिम उसकी तान, अरे मन हरने वाली।।
कहती सरला आज, सभी के मन को भाये।
घूमत पीछे बाल, बाग में कोयल गाये।।

26

अम्बर

डाले अम्बर पट सखी, धरा चली है आज।
खिलता कितना रूप है, धानी चूनर साज।।
धानी चूनर साज, लगे यह शोभाशाली।
सुन्दर इसका रूप, लगे यह तो मतवाली।।
कहती सरला आज, सभी है इसके पाले।
धारे अनुपम रूप, चली अम्बर पट डाले।।

27

अविरल

धरती पर अविरल बही, जीवन की ये धार।
सदियां बीती युग गये, कभी न मानी हार।।
कभी न मानी हार, रही आगे ही बढ़ती।
धरती को कर पार, चांद सूरज पर चढ़ती।।
कहती सरला आज, लगे झरना हो झरती।
मनहर सा है रूप, लिए जीवनमय धरती।।

28

सागर

मानव मन सागर सदृश, सके न कोई जान।
कंकड़ पत्थर ही चुने, करते बस अनुमान।।
करते बस अनुमान, नहीं सच पूरा जाने।
छिपा कहीं अज्ञान, कहीं ज्ञानी सब माने।।
कहती सरला आज, लगे कोई है दानव।
लगता बड़ा अथाह, अरे यह मन है मानव।।

29

अनुपम

राधे की शोभा लगे, अनुपम अद्‌भुत आज।
चरणों में उनके झुका, सारा देव समाज।।
सारा देव समाज, करें सब मां की पूजा।
कोई नाहीं आज, लगे मां के सम दूजा।।
कहती सरला आज, सभी का मन ये साधे।
सबकी ही ये आस, करें पूरी मां राधे।।

30

धड़कन

धड़कन दिल की है बढ़ी, चली पिया के देश।
रोको अब कोई नहीं, सजी पिया के वेश।।
सजी पिया के वेश, नहीं बाबुल घर सोहे।
भाता उसे न साज, नहीं माया ही मोहे।।
कहती सरला बात, बढ़ी है मन की तड़पन।
चलती बेढब आज, रही बढ़ उसकी धड़कन।।

31

वीणा

करती वीणा झंकार, सभी का मन मोहित।
माता के हाथों आज, रही है यह शोभित।
रही है यह शोभित, करे झंकृत मन सारा।
कहती सरला आज, लगे मातुरूप प्यारा।
होता बेड़ा पार, हाथ जिस पर वे धरती।
देती हैं आशीष, पार उसको हैं करती।।

32

नैतिक

नैतिक कहलाये वही, करना ऐसा काम।
लोगों का करना भला, करो देश का नाम।।
करो देश का नाम, मान जग में पाओगे।
परचम ऊंचा सदा, देश का फहराओगे।।
कहती सरला बात, रहे न कोई अनैतिक।
करना ऐसा काम, सभी बन जायें नैतिक।।

33

विजयी

होते हैं विजयी सदा, भारत के ही पूत।
उनमें हैं क्षमता भरी, साहस भरा अकूत।
साहस भरा अकूत, देखकर दुश्मन भागे।
झंडा इसका रहे, सभी से आगे-आगे।
कहती सरला बात, लोग जब घर में सोते।
सरहद पर ये वीर, डटे हरदम ही होते।।

34

भारत

सबसे ही सुंदर लगे, भारत देश महान।
समता है इसकी नहीं, सभी करें सम्मान।।
सभी करें सम्मान, राम व कृष्ण की धरती।
बसते हैं सब लोग, कई भाषाएं पलती।।
सरला कहती ज्ञान, वेद पुराण हैं कबसे।
रहता ज्ञानागार, देश यह सुन्दर सबसे।।

35

छाया

तेरी छाया में पली, काया मिली अनूप।
माया तेरी ही रही, बढ़ा रंग अरु रूप।।
बढ़ा रंग औ रूप, ज्ञान तुमसे ही आया।
चलने की औकात, मात तुमसे ही पाया।।
कहती सरला आज, बात सुन ले मां मेरी।
करना इतना मात, मिले नित दर्शन तेरी।।

36

निर्मल

ऐसा निर्मल है सखी, माता का दरबार।
आये जो इक बार है, आये फिर हरबार।।
आये फिर हर बार, करे दरबार की फेरी।
ममता का इक छांव, रही चाहत मां मेरी।।
सरला कहती आज, नहीं कोई मां जैसा।
सबकी रखती लाज, लगे सबको ही ऐसा।।

37

विनती

सारे मिल विनती करें, दो दर्शन रघु नाथ।
आओ फिर तुम धरा पर, धरो शीश पर हाथ।।
धरो शीश पर हाथ, करो मत अब तुम देरी।
व्याकुल सब हैं आज, लगा लो तुम अब फेरी।।
कहती सरला आज, प्रभू कितनों को तारे।
तारो हम को नाथ, करें विनती हम सारे।।

38

भावुक

होता भावुक मन बड़ा, जैसे कोमल फूल।
छोटी छोटी बात भी, लगता इसको शूल।।
लगता इसको शूल, इसे मत चोट लगाना।
सबका रखना मान, सभी को सुख पहुचाना।।
सरला कहती बात, दुखी मन है जब रोता।
जीवन की यह रीत, उसे भी दुख है होता।।

39

धरती

धरती है गरिमामयी, वन है इसकी शान।
मत काटो तुम वृक्ष को, इतना कहना मान।।
इतना कहना मान, सभी मिल वृक्ष लगायें।
बाग बगीचा लगा, धरा को चलो बचायें।।
कहती सरला बात, सभी से विनती करती।
आओ मिलकर आज, सजायें अपनी धरती।।

40

मानव

मानव सभी समान है, मत इसको तू बांट।
कर्म लेख को बांच ले, पहले इसको छांट।।
पहले इसको छांट, नहीं कुछ करना कच्चा।
जो करना यह जान, सभी हो केवल सच्चा।।
कहती सरला बात, नहीं बच पायें दानव।
करना यह उपकार, बनो तुम सच्चे मानव।।

41

गागर

गागर ले गोरी चली, करें प्रीत की बात।
कान्हा से अनबन हुई, लगे न मन दिनरात।।
लगे न मन दिनरात, करें क्या जतन बताओ।
जाओ सखि तुम आज, जरा उनको समझाओ।।
कहती सरला बात, दिखे आवत नटनागर।
सारी अनबन छोड़, चलीं सब लेकर गागर।।

42

सरिता

सरिता कल-कल बह रही, शांत भाव से आज।
शोभा अतुलित छा रही, करती खुद पर नाज।।
करती खुद पर नाज, अरी हिमपति की बेटी।
लायी अपने साथ, भरे रत्नों की पेटी।।
कहती सरला बात, लगे नव व्याहित वनिता।
जीवजंतु सब आज, देख मोहित हैं सरिता।।

43

गहरा

मानव मन गहरा सखी, सके न कोई माप।
सागर का भी नाप है, मानव मन बेनाप।।
मानव मन बेनाप, कभी लगता है सुलझा।
सुलझे जब तक बात, लगे यह उतना उलझा।।
कहती सरला आज, बना मानव क्यों दानव।
उलझी सी है बात, समझ कब पाया मानव।।

44

आँगन

तेरे आंगन की कली, मैया मैं हूं आज।
करना मत तुम दूर यूं, दिल में रखना साज।।
दिल में रखना साज, कभी जब बड़ी बनूंगी।
तेरा ऊंचा नाम, सदा मैं मात करूंगी।।
सरला कहती आज, साथ चलना बस मेरे।
दुनिया की क्या बात, चांद सूरज भी तेरे।।

45

आधा

रोती क्यों जग में वही, आधा जो संसार।
उसके बिन संभव नहीं, चले सृष्टि व्यापार।।
चले सृष्टि व्यापार, कहां नारी बिन धरती।
करते कुछ अपमान, कहीं जीवित ही मरती।।
सरला कहती आज, यही क्यों हैं दुख ढोती।
नारी जग आधार, वही सदियों से रोती।।

46

यात्रा

जीवन यात्रा है विकट, चलो पैर संभाल।
देखो पथ केवल सुपथ, रखना उन्नत भाल।।
रखना उन्नत भाल, सदा परहित रत रहना।
कंटक पथ के साथ, सदा नदियों-सा बहना।।
कहती सरला बात, धरो धीरज संजीवन।
मंजिल हो आसान, बने अति सुन्दर जीवन।।

47

कोना

कोना ही देदो मुझे, अपने चरणों में मात।
जीवन होगा सफल ये, जाने सब ये बात।।
जाने सब ये बात, करें सब विनती तेरी।
माता रख दो हाथ, आज तुम सिरपर मेरी।।
सरला कहती बात, उसे कब पड़ता रोना।
जाने सब हैं मिले, जिसे चरणों में कोना।।

48

मेला

सारा जग मेला सदृश, दिवस लिए दिन चार।
माया का सब खेल है, मतकर दिन बेकार।
मतकर दिन बेकार, जरा कर कर्म कमाई।
बांटो खुशियां आज, करो तुम जगत भलाई।
कहती सरला आज, बना ले जीवन न्यारा।
माया बंधन काट, करो सुखमय जग सारा।।

49

धागा

धागा बांधे प्रीत की, आयी साजन द्वार।
रखना मेरी लाज जी, करना भव से पार।।
करना भव से पार, आस जागी मन मेरे।
माया ठगिनी आज, राह मेरी है घेरे।।
कहती सरला बात, प्रीत मन में है जागा।
बन्धन सारे तोड़, प्रेम का बांधे धागा।।

50

बिखरी

बिखरी अलकें देखकर, राधे जी की आज।
शरमाये काली घटा, आये देखो लाज।।
आये देखो लाज, भयी वह पानी पानी।
चमके बिजली साथ, चलें जब राधा रानी।।
कहती सरला बात, बड़ी शोभा है निखरी।
लगती किरणें आज, चांद की जैसे बिखरी।।

51

गलती

गलती हो कोई अगर, करना उसको माफ।
जीवन तुझको है दिया, दिल मेरा है साफ।।
दिल मेरा है साफ, दया बस इतनी करना।
रखना सिर पर हाथ, सदा झोली यह भरना।।
कहती सरला आज, रहे दुनिया यह चलती।
तेरा आशीर्वाद, माफ करना हर गलती।।

52

बदला

लगता सब बदला यहां, लगें बदलते लोग।
स्वार्थ में डूबा हुआ, लगा अजब यह रोग।।
लगा अजब यह रोग, नहीं पहचाने अपने।
माया का सब खेल, और उलझे से सपने।।
कहती सरला बात, दिखे जग खाली भगता।
खोया है जज़्बात, नहीं अपनापन लगता।।

53

दुनिया

भोली है दुनिया बड़ी, भूली जीवन मोल।
बारूदों पर है खड़ी, लगे उसे अनमोल।।
लगे उसे अनमोल, बात इतना सा भूली।
अपने हाथों आज, बनाती अपनी शूली।।
कहती सरला आज, खेल बारूद व गोली।
करती खुद का नाश, बनी इतनी है भोली।।

54

तपती

तपती धरा पुकारती, देख मेघ को आज।
आओ प्यारे मेघ तुम, तुमपर जग को नाज़।।
तुम पर जग को नाज़, राह देखें सब तेरी।
देखो जी घनराज, चले बिजली ले चेरी।।
कहती सरला बात, धरा माला सी जपती।
बरसे झमझम मेघ, भयी खुश धरती तपती।

55

मेरा

मेरा तेरा कुछ नहीं, यही जगत की रीत।
माया खेले खेल यह, बजे उसी का गीत।।
बजे उसी का गीत, रहे सब उसमें उलझे।
भूले सच औ झूठ, नहीं अब बात है सुलझे।।
कहती सरला आज, नहीं कुछ जग में तेरा।
करले प्रभु का ध्यान, छोड़ कर तेरा मेरा।।

56

सबका

सबका मालिक है एक, रहा जगत को पाल।
मंदिर मस्जिद सब वही, सुलझा ले अब जाल।
सुलझा ले अब जाल, चैन मन में आयेगा।
मंजिल सबकी जान, ज्ञान यह जब पायेगा।
कहती सरला बात, सबका एक हो तबका।
कोई जात न पात, एक हो मालिक सबका।।

57

आगे

आगे आगे चल रहा, देख सखी री भाग्य।
कितना भी करते जतन, रुके नहीं दुर्भाग्य।।
रुके नहीं दुर्भाग्य, हाथ मलते रह जाते।
करते लाख उपाय, नहीं कुछ भी कर पाते।।
कहती सरला आज, लोग कितना ही भागे।
समय-चक्र बलवान, चले यह आगे आगे।।

58

मौसम

मानव भी मौसम बना, बदले हरदम रूप।
सुन्दर सा लगता कभी, बनता कभी कुरूप।।
बनता कभी कुरूप, देख राक्षस शरमाये।
मिलता कभी सुरूप, सभी के मन को भाये।।
कहती सरला बात, बने कुछ मानो दानव।
सुंदर धरती आज, रहा बिगाड़ खुद मानव।।

59

जाना

जाना है सबको वहीं, सबकी मंजिल एक।
करना सबका ही भला, रखना नीयत नेक।।
रखना नीयत नेक, सभी का मालिक कहता।
चाहे नाम अनेक, राह सत्पथ ही रहता।।
कहती सरला बात, सभी के मन ने माना।
चलना पथ पर नेक, यहां से सबको जाना।।

60

करना

करना कुछ ऐसा सदा, गाये जग तेरे गीत।
रहना सत्पथ पर डटे, बनो सभी के मीत।।
बनो सभी के मीत, कहें सब तुझको अपना।
सबका मनखिल जाय, और पूरा हो सपना।।
कहती सरला बात, सदा सबके दुख हरना।
जीवन है अनमोल, सदा सार्थक तुम करना।।

61

दीपक

करती उजियारा सखी, दीपक जलकर आज।
पूजा का माध्यम बनी, जलती सबके काज।।
जलती सबके काज, सदा से राह दिखाती।
भटके पाते राह, नहीं बदले कुछ पाती।।
कहती सरला बात, सदा अंधेरा हरती।
जलती तिलतिल आज़, नाज़ है फिर भी करती।।

62

पूजा

पूजा की थाली सजा, लेकर सखियां आज।
मनही मन सुमिरन करे, रखना प्रभुजी लाज।।
रखना प्रभुजी लाज, नाथ तुम ही बस मेरे।
दुविधा कर दो दूर, रही मन को जो घेरे।।
कहती सरला बात, नहीं तुम बिन है दूजा।
करती विनती नाथ, सदा करती है पूजा।।

63

थाली

थाली कंचन की लिए, व्यंजन उसमें साज।
रूठी बेटी सामने, चली मनाने आज।।
चली मनाने आज, करें सब उसके मनका।
करती जतन अनेक, होश कब अपने तनका।।
कहती सरला बात, मात की रीत निराली।
खिलते मुख की चाह, चली लेकर वह थाली।।

64

बाती

बाती के मन में उठी, दिन में ऐसी बात।
जलती तो मैं हूं सदा, चाहे दिन या रात।
चाहे दिन या रात, जली मैं तिल तिल करके।
करती सदा प्रकाश, यहां पर मैं जी भरके।
कहती सरला आज, नाम बस दीया पाती।
होता कब है नाम, नाम की केवल बाती।।

65

आशा

आशा रखना तुम सदा, होना नहीं निराश।
आये दुख कोई कभी, डिगे नहीं विश्वास।।
डिगे नहीं विश्वास, तभी तुम नाम करोगे।
अपने ही तुम साथ, सभी में आश भरोगे।।
कहती सरला आज, छोड़ दो सभी निराशा।
ऊंची भरो उड़ान, लिए मन में दृढ़ आशा।।

66

उड़ना

उड़ना सीधे क्षितिज तक,रखकर दृढ़ विश्वास।
सबकुछ तेरे हाथ में, रखकर ऐसी आस।।
रखकर ऐसी आस, बढ़ो तुम सबसे आगे।
करना ऐसे काम, नींद में सोते जागे।।
कहती सरला बात, नहीं तुम पथ से मुड़ना।
धरती की क्या बात, चांद सूरज तक उड़ना।।

67

खिलना

खिलना तुम ऐसे सदा, जैसे फूल गुलाब।
कांटों में भी वो खिले, लेकर मनहर आब।
लेकर मनहर आब, इसी में मिले बड़ाई।
होता कब लाचार, कहो कब करे लड़ाई।
कहती सरला बात, किसी से जब भी मिलना।
खुशियां सबमें बांट, सदा फूलों सा खिलना।

68

होली

होली तो होली सखी, पिया बसे परदेश।
आये जाने क्यों नहीं, नहीं दिया सन्देश।।
नहीं दिया सन्देश, जिया में पीड़ा भारी।
हाथों लिए गुलाल, राह तकती मैं हारी।।
कहती सरला बात, नहीं सोहे रंगोली।
कहदो उनसे आज, चलो घर आई होली।।

69

साजन

सजनी देखे राह है, साजन की दिन रात।
भाता है उसको नहीं, करना सखि से बात।।
करना सखि से बात, लगे उदास बहु प्यारी।
सुन्दर सा है रूप, लगे जो सबसे न्यारी।।
सरला कहती आज, जगे वह पूरी रजनी।
लेकर मन में आस, बाट देखे है सजनी।।

70

सजना

धरती सजना के लिए, हर दिन सुन्दर रूप।
सजना को भाये नहीं, उसको लगे कुरूप।।
उसको लगे कुरूप, करें बस अपने मनकी।
दिलकी सुनें न बात, उसे सूझे बस धनकी।।
कहती सरला राज, रोज वह जतन है करती।
करती विनती आज, चले आओ अब सजना।।

71

डोरी

डोरी बांधे प्रेम की, देखे पिय की राह।
दुनिया सारी छोड़ दी, साजन की बस चाह।।
साजन की बस चाह, करे सांसों की गिनती।
भवसागर से पार, करो सुन लो ये विनती।।
सरला कहती आज, चली साजन घर गोरी।
माया तृष्णा छोड़, प्रेम की बांधे डोरी।।

72

बोली

बोली है सबसे बड़ी, बोलो इसको तोल।
सबका मन जीते यही, जानों इसका मोल।।
जानो इसका मोल, बोल बस मीठे बोलों।
नफ़रत सारे छोड़, सभी कड़वाहट धोलो।
कहती सरला आज, भरें प्रभु तेरी झोली।
मिलकर रहना साथ, सदा बोलो मृदु बोली।।

73

पाना

पाना है तो पा उसे, जो जीवन आधार।
हो जाये जीवन सफल, नैया उतरे पार।।
नैया उतरे पार, बहुत भवसागर गहरा।
सांसों की ये डोर, लगा इस पर भी पहरा।।
कहती सरला आज, यहां बस आना जाना।
होना नहीं उदास, सोच मत खोना पाना।।

74

खोना

खोना पाना कुछ नहीं, ईश्वर का बस खेल।
जीवन मेला लगा है, चार दिनों का खेल।।
चार दिनों का खेल, रहो मिलजुलकर सारे।
नीयत रखना ठीक, झूठ से रहो किनारे।।
कहती सरला बात, सभी का एक ही रोना।
पाना चाहें आज, नहीं चाहें कुछ खोना।।

75

यादें

भूली सी यादे सभी, आती मुझको याद।
कहती चल फिरसे वहीं, करती हैं फरियाद।।
करतीं हैं फरियाद, बड़ा बचपन था प्यारा।
सारा बीता आज, बड़ा लगता है न्यारा।।
कहती सरला बात, लगें दुनिया ये शूली।
लगती सुन्दर आज, रही यादें जो भूली।।

76

छोटी

बनती है देखो बड़ी, छोटी-छोटी बात।
समझो फिर बोलो सखी, रहे ध्यान जज्बात।।
रहे ध्यान जज्बात, साथ सबका तुम देना।
बनना सबके मीत, सभी के दुख हर लेना।।
कहती सरला बात, लगे दीवाली मनती।
जिनका ऐसा साथ, बात उनकी है बनती।।

77

मीठी

बातें करता वह सखी, कितनी मीठी आज।
माता है पुलकित बड़ी, करती सुतपर नाज।।
करती सुतपर नाज, लगे हर्षित बहु माता।
इतना सुन्दर पूत, मनुज किस्मत से पाता।।
कहती सरला आज, लगे बातें सौगातें।
चलता डगमग पांव, करे तुतलाकर बातें।।

78

बातें

आती हैं मुझको बहुत, बातें उसकी याद।
चंचल चितवन खींचती, मन करता फरियाद।।
मन करता फरियाद, करे बस पियकी बातें।
खींचें अपनी ओर, नहीं देखें दिन रातें।।
कहती सरला आज, दूर तक बातें जातीं।
जाती कुछ पल भूल, याद घिर-घिर हैं आती।।

79

चमका

चमका चंदा गगन पर, फैला यहां उजास।
पुलकित मन ये हो गया, कोई नहीं उदास।।
कोई नहीं उदास, खुशी मुख पर है छाया।
कान्हा के ही साथ, साथ राधे को लाया।।
कहती सरला आज, लगे सारा जग गमका।
महारास की रात, चांद भी चमचम चमका।।

80

गीता

गीता तुम पढ़ना सदा, देता है बहु ज्ञान।
आंखों को है खोलता, करता दूर अज्ञान।।
करता दूर अज्ञान, खेल खेले है माया।
उसके वश में लोग, मोह दिल पर है छाया।।
कहती सरला बात, छोड़ अब जो है बीता।
पाना है यदि ज्ञान, पढ़ो हर दिन तुम गीता।।

81

माना

माना है तुझको प्रभू, जीवन का आधार।
रखना मेरी लाज तुम, करना भव से पार।।
करना भव से पार, नहीं अब करना देरी।
तुमने तो रघुनाथ, कई की किस्मत फेरी।।
कहती सरला आज, जिया में मैंने ठाना।
नैया तेरे हाथ, आप को नाविक माना।।

82

कहना

कहना है कुछ भी नहीं, सब लोगे तुम जान।
लगता है अब मन नहीं, लो बातें अब मान।।
लो बातें अब मान, पार कर देना नैया।
दुनिया लगे अपार, सुन लो मेरे खिवैया।।
कहती सरला आज, नहीं मन चाहे सहना।
प्रभुवर मेरे नाथ, मान लो दिलका कहना।।

83

सहना

सहना आता है नहीं, गलत दिखे जो काम।
करते वहीं हिसाब हैं, और देश का नाम।।
और देश का नाम, कांपते दुश्मन सारे।
अपने वीर महान, सभी हैं इससे हारे।।
कहती सरला आज, नहीं माने जो कहना।
दुश्मन मद हो चूर, वीर जानते न सहना।।

84

वंदन

वंदन मां तेरा करूं, चरणों में रख माथ।
करना मां साया सदा, रखना मुझको साथ।।
रखना मुझको साथ, आस करना मां पूरी।
देना मां आशीष, साधना सधे जरूरी।।
कहती सरला आज, लगाती माथे चंदन।
दीपक लेकर हाथ, करूं माँ तेरा वंदन।।

85

आसन

माता का आसन सजा, रही विराजित मात।
करती मां सब पर दया, पाते सब सौगात।।
पाते सब सौगात, निराली मां की लीला।
जिसपर रख दें हाथ, भाग्य उसका रंगीला।।
कहती सरला बात, वही जीवन तर जाता।
पाता आशीर्वाद, जिसे अपनाती माता।।

86

आतुर

मानव है आतुर बड़ा, पाने को सब आज।
भूला पागल है यही, आता कब कुछ काज।।
आता कब कुछ काज, देह तक साथ न जाता।
माया का सब खेल, नहीं कुछ मानव पाता।।
कहती सरला आज, बना काहे तू दानव।
करले अच्छे काम, और सच्चा तू मानव।।

87

आभा

निखरी आभा देख लो, राधे जी की आज।
कान्हा जी हैं आ रहे, छाया मुख पर लाज।।
छायी मुख पर लाज, आज लगती अति प्यारी।
शोभा लगे अनूप, और छवि लगती न्यारी।।
कहती सरला बात, शशि चन्द्रिका है बिखरी।
महारास की रात, सभी की शोभा निखरी।।

88

चितवन

मोहे मन मेरा सखी, चितवन उसकी आज।
खींचें बिन डोरी मुझे, आये मन में लाज।।
आयेमन में लाज, करूं क्या समझ न आता।
देखे बिन भी श्याम, चैन कब मन यह पाता।।
कहती सरला आज, नहीं मन को कुछ सोहे।
मोहक मोहन रूप, सभी के मन को मोहे।।

89

मोहक

लगता हैं मोहक बहुत, मां का अनुपम रूप।
मधुर रूप है मात का, झुकें सामने भूप।।
झुकें सामने भूप, शक्ति कहलाती माता।
देतीं भर भंडार, मान वो जग में पाता।।
कहती सरला आज, भाग्य है उसका जगता।
मिलता आशीर्वाद, सफल जीवन है लगता।।

90

शीतल

शीतल मन रखना सदा, कभी नहीं अभिमान।
माया तृष्णा छोड़ कर, सबका करना मान।।
सबका करना मान, प्रेम की बोलो बोली।
कंटक पथ हो जाय, लगे मानों रंगोली।।
सरला कहती बात, स्वर्ण भी लगता पीतल।
समरस सब हो जाय, सभी का मन हो शीतल।।

91

हारा

हारा जग से आज मैं, नहीं सूझती राह।
जीवन लगता है जटिल, भूली सारी चाह।।
भूली सारी चाह, करूं विनती नट नागर।
दिखलाओ पथ नाथ, देख यह रीती गागर।।
कहती सरला आज, लगे जग सारा कारा।
कर दे भव से पार, आज मैं खुद से हारा।।

92

जीता

जीता है केवल वही, जीते खुद को आज।
माया तृष्णा छोड़ कर, लिया करम को साज।।
लिया करम को साज, साथ सबके वह जाता।
करलो प्रभु का साथ, वही सबका है दाता।।
कहती सरला बात, ज्ञान देती यह गीता।
पाता है वह जीत, यहां खुदको है जीता।।

93

नारी

नारी है नारायणी, अनुपम इसका रूप।
जीवन देती जगत को, इसके काम अनूप।।
इसके काम अनूप, कहें सब इसको माता।
शक्ति की अवतार, सृष्टि की जीवनदाता।।
कहती सरला बात, नहीं जीवन में हारी।
दुर्गा काली रूप, आत्मनिर्भर है नारी।।

94

साहस

रखती है साहस सदा, करे काम हर एक।
बाहर भीतर हर कहीं, इसके रूप अनेक।।
इसके रूप अनेक, जगत में डंका बाजे।
सरहद पर भी आज, साथ पुरुषों के साजे।।
कहती सरला बात, वीरता के फल चखती।
निर्भर निर्भय नार, भाव वीरों के रखती।।

95

नटखट

नटखट मन है बावरा, सके समझ ना बात।
दिनदस का सब खेल है, कुछ दिन औ कुछ रात।।
कुछ दिन औ कुछ रात, समझ जाता जो बातें।
माया का सब खेल, कटे दिन जैसी रातें।।
सरला कहती आज, सदा मन करता खटपट।
समझ समझ का फेर, फिरे मन बनके नटखट।।

96

अंकुश

अंकुश मन परलगा ले, सब कुछ हल हो जाय।
भवसागर हो फिर सहज, साजन घर वह पाय।
साजन घर वह पाय, छोड़ दें फिर वह माया।
जीवन यह तर जाय, सफल जीवन जो पाया।
कहती सरला बात, बने मन नहीं निरंकुश।
करना वश में आज, लगा रखना तुम अंकुश।।

97

चंदन

चंदन माथे पर सजा, गले गुंज की माल।
सिर पर बांधे वे मुकुट, चले अजब ही चाल।।
चलें अजब ही चाल, सभी के मन को मोहे।
तुतलाते वे बोल, पांव पैजनियां सोहे।।
कहती सरला आज, देव सब करते वंदन।
मोहनि मोहन रूप, रचा माथे पर चंदन।।

98

थोड़ा

थोड़ा सा जीवन मिला, और मिले दिनचार।
गहना सच्चाई सदा, मिले जीत या हार।।
मिले जीत या हार, जियो मानवता खातिर।
दुनिया बड़ी अजीब, मिलेंगे कुछ तो शातिर।।
कहती सरला आज, काम आता कब जोड़ा।
करना ऐसा काम, बढ़े मानवता थोड़ा।।

99

पूरा

पूरा हो सपना सभी, मंजिल भी मिल जाय।
हसरत अधूरी न रहे, सब कुछ सब जनपाय।।
सब कुछ सब जन पाय, लगें सब अपने जैसे।
सहज सरल हो रूप, सभी हों जग में ऐसे।।
सरला कहती आज, करें सब काम अधूरा।
अपने ही हम साथ, सभी का सपना पूरा।।

100

सपना

सपना पूरा हो रहा, मन की पूरी आस।
अपने के कारण सखी, मंजिल आयी पास।।
मंजिल आयी पास, धन्य जग में कहलाते।
अपने ही वे साथ, सभी के काम हैं आते।।
कहती सरला बात, मानती उनको अपना।
जिनके कारण आज, हुआ पूरा यह सपना।।

डॉ सरला सिंह 'स्निग्धा'
दिल्ली

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

नाम- **डॉ. सरला सिंह 'स्निग्धा'**

जन्मतिथि- ०४ अप्रैल

पति- श्री राजेश्वर सिंह

स्थायी पता- १८०ए पाकेट ए-३ ,मयूर विहार फेस ३ ,दिल्ली ९६

फोन नं.- ९६५०४०७२४०

जन्म- ग्राम-बलुआ पोस्ट, मलिकपुर,जिला-सुल्तानपुर (यू.पी.)

शिक्षा- बी.ए., एम.ए.(हिन्दी साहित्य), बी.एड., पी.एच.डी.

व्यवसाय- शास.शिक्षिका

प्रकाशन- साझा काव्य संकलन 'काव्यकलश', 'नवकाव्यांजलि', 'स्वप्नगंधा'
काव्यसंग्रह- 'जीवनपथ' तथा 'आशादीप' एकल
कहानी संग्रह- 'जीवन का समर'
शोधग्रंथ- 'पौराणिक प्रबंध काव्यों में पात्रों का चरित्र'
कविताओं का यूथएजेन्डा, नये पल्लव, काव्यरंगोली तथा गुफ्तुगू जैसी प्रसिद्ध साहित्यक पत्रिकाओं में प्रकाशन। दैनिक पत्रिकाओं यथा दिल्ली हमारा मैट्रो, उत्कर्ष मेल आदि में नियमित प्रकाशन। फेसबुक तथ व्हाट्सएप से जुड़े साहित्यिक ग्रुपों में नियमित रूप से कविताएँ भेजना। अनुराधा प्रकाशन दिल्ली ।

उद्देश्य- सामाजिक विसंगतियां दूर करना ।

सम्मान - अनुराधा प्रकाशंन द्वारा १-साहित्यश्री सम्मान,२-महिला गौरव सम्मान,३-साहित्य सागर द्वारा युगसुरभि सम्मान,४-माण्डवी प्रकाशंन द्वारा, ५-साहित्य रत्न सम्मान आदि।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-231-9

मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/